समावेशन (Inclusion)

समावेशन के अनुसार किसी भी बच्चे को किसी भी आधार पर सामान्य बच्चो से अलग करना और उनकी शिक्षा की व्यवस्था अलग से करना। समावेशी शिक्षा के सम्बन्ध मे कहा गया है सीखने सम्बन्धी भिन्नता हमारे लिए मूल्यवान है। तथा किसी भी प्रकार की भिन्नता का हम आदर करते है चाहे वह अन्तर आयु, लिंग, भाषा, वर्गीय या अपंगता से ही क्यो न हो।

यूनेस्को के शब्दो मे —

"व्यापक रूप से समावेशन को एक ऐसे सुधार के रूप मे लिया जाता है जिसमे सीखने वालो की भिन्नता का आदर किया जाता है।"

प्रायः समावेशन के दो रूप होते है —

(i) सम्पूर्ण समावेशन
(ii) अल्प समावेशन

चार दशक पहले ही कोठारी आयोग ने 'समान विद्यालय' का आदर्श व्यक्त किया था।

Scanned with CamScanner

विद्यालय संवेदनशीलता
(School Sensitivity)

पाठ्यचर्या का प्रमुख आधार बच्चों को विद्यालय के प्रति संवेदनशील बनाना है। पाठ्यचर्या की रूपरेखा इस आधार पर तैयार की जानी चाहिए कि भारत सबसे बड़े और सबसे पुराने लोकतन्त्रों में से एक है।

बच्चों को पर्यावरण संरक्षण के प्रति जागरूक बनाना, पाठ्यक्रम के अन्तर्गत सम्बन्धित विषयों का समावेश करना भी विद्यालय संवेदनशीलता का उदाहरण है। असहिष्णुता के भाव को देखते हुए शांति शिक्षा को जीवन में संघर्ष सुलझाने हेतु चुनना चाहिए।

अतः स्कूली पाठ्यचर्या के एक एकीकृत परिप्रेक्ष्य के रूप में शांति शिक्षा को विद्यालय संवेदनशीलता के परिप्रेक्ष्य में देखा जा सकता है।